64th Kerala School Kalolsavam, January 14 to 18, 2026, Thrissur

Item Code: 642 Participant Code: 028

കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തീയതി.......... പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

मेरी असलियत

"माँ, मैं हार से नहीं डरती, पर उस पल से डरती हूँ जब मेरी वजह से आपके आँखो का चमक बुझ जाए" वेदा काँपती हुई स्वर में कहा। लेकिन उसकी नजरे आसमान के चमकती तारों पर टिकी थी। मानो वह अपनी मंजिल तलाश रही हो। वेदा का आँखो मे आँसू थे और आवाज में शक। वह जानती थी कि हर गिरना एक उड़ान के पहले आता है।

माँ ने वेदा की ओर देखा। कुछ नही कहा। बस थपथपा दिया। उस समय माँ कि आँखो में नमी और संघट दोनो थे।

वेदा का जिंदगी पहेली जैसी थी। जब वेदा आठ साल की थी पिता की मौत हुई। बाई बहन बिछड गई। अधूरा जीवन माँ की उम्मीद की रोशनी से चलती रही। उस काली रात की तरह वेदा के जिंदगी में भी काला छाया था।

एक दिन वेदा को एक अजनबी का संदेश मिलते है। एक जली हुई कागज से। उसमें से जलने की बदबू आ रही थी। खून का धब्बा भी थी। वेदा डरी हुई वह कागज खोला। उसमें एक पुरानी घर का पता था जो दस साल से बंद था। उसकी जिज्ञासा ने उसे वहा लेकर गई।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

वह घर बहुत पुरानी थी। बाहर से दिखने में बिलकुल डरावनी थी। वेदा हौसला बढ़ाकर दरवाजा खोली। अंदर से वह बहुत साफ और स्वच्छ था। यह वेदा को हैरान कर दिया। वेदा घर में प्रवेश किया। उस घर का सामान नए थे। तभी वेदा को एक डायरी मिली जो एकमात्र पुरानी चीज़ थी। अचानक वेदा के मन में शक फैलने लगी। क्यू कि उस डायरी में वेदा कि पिता का नाम लिखा था। वेदा खुद से पूछने लगी "क्या मेरी अब्बु की मौत के पीछे एक रहस्य है"। वेदा वह सुराक लेकर वहा से गई।

घर पहुँचने बाद वेदा डायरी पढने लगी। लेकिन वह एक कोड भाषा में लिखा था जो समझना बहुत मुश्किल हो। तभी ~~उस~~ ~~के~~ वेदा देखा कि डायरी कि आखरी पन्ने पर एक नकशा बना हुआ था। जो एक गुफा कि ओर इशारा कर रहा था। वेदा के दिल में शक और जिज्ञासा एक साथ बढ़ने लगी। लेकिन अपने अब्बु का राज़ जानने में वेदा कहाँ थक जा सकती थी।

यह वेदा को गुफा कि तलाश केलिए मजबूर किया। एक हफ्ता लगातार तलाश करने कि बावजूद भी वेदा को कोई सुराक नहीं मिली। तभी वेदा के मन में एक ख्याल आया कि अपनी अम्मी से पूछने का।

64th Kerala School Kalolsavam, January 14 to 18, 2026, Thrissur

Item Code: 242 Participant Code: 028

वेदा के यह सवाल सुनते ही माँ घबराने लगी। कोई जवाब तक नही दिया। वेदा अपनी माँ के आँखो में देखे तो वह कुछ कहना चाहती थी। लेकिन वह डरी हुई थी। अपनी माँ कि यह हरकत वेदा को और उलझन में फसाया। वेदा क यह पहेली भी समय के साथ-साथ मुश्किल होती रही।

कई दिनों कि तलाश के बाद वेदा ने वह गुफा ढूंढ ली लिया। एक धूल भरी गुफा जहाँ वह उड़ रहे थे। वेदा को लगा कि यहा सुराक मिलना ना मुमकिन है। तभी वेदा ने देखा कि एक पदचिन्ह है जो अंदर गया है। और वह नई लग रही थी। वेदा बहुत डरी हुई थी फिर भी वेदा हौसला बढाकर गुफा की अंदर प्रवेश किया। एक मशाल के साथ। उस समय वेदा ने देखा कि एक आदमी हाथकडियो मे बाँधा हुआ था। और उसका चारों तरफ खतरनाक हथियार भी थे। वेदा उस आदमी क तरफ कदम बढाने लगी। तभी वेदा महसूस किया कि कोई उसपे नजर रख रहा है। वेदा पीछे मुडके देखा तो एक खतरनाक औरत खंजर के साथ दिवार के पीछे खडा हुआ था। वेदा डरने लगी। अंधा होने का नाटक करके वेदा वहा से बचके निकली। उस समय वेदा के दिल में सिर्फ डर थी।

वह हादसे के बाद वेदा ने यह तैय कर लिया था कि इसके बाद वेदा कभी भी उस डायरी और गुफा के पीछे नही जाएगी।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

सोते वक्त वेदा ने यही सोचते हुए अपनी दुनिया में खो गई थी। तभी वेदा समझा कि वह अजनबी का संदेश, डर, डायरी, गुफा सब आपस में जुड़ा हुआ था। और यह सब अपनी पिता के बीच भी रहस्य रखते है जो यह पहेली का हल ढूंढने से बाहर आ सकता है। लेकिन वेदा के मन में भरोसे से ज्यादा शक था। खुद पर शक। तभी वेदा ने अपनी अम्मी के लब्ज़ याद किया कि "जहाँ शक होता है वहाँ यकीन नही होता" यह वेदा को सकारात्मक बना दिया।

उसी काली रात वेदा गुफा में गई। जैसे पहली बार वेदा यकीन से जा रहा था। वह हथकड़ियों में बाँधा हुआ आदमी के पास पहुँची। तभी वेदा एक जोर के झटका लगा। वह और कोई नही थे वेदा की पिता थे। वेदा बहुत खुशी से पिता को गले लगाया। वेदा को लगा था कि वह अपने अब्बु के मौन के पीछे के रहस्य तक पहुँचेगी लेकिन यहाँ वेदा अपनी पिता को ढूंढने में ही कामयाब हो गई। तभी दोनों ने दरवाज़ा खोलने का आवाज सुना। वेदा अपनी पिता को बचाने केलिए उस गुफा के खुफिया रास्ते से निकल पड़ी। वहाँ वही औरत थी जो वेदा ने कल देखा था। उस समय वेदा का पिता ने कहाँ "तुमने मुझे दस साल से कैद में रखा। और नही।" इसके बाद वहाँ एक खतरनाक लड़ाई हुई।

64-ാം കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം
പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

Item Code: 642 Participant Code: 028

जो दिखने के अलावा वेदा और कुछ नही कर सका। तलवार और खंजर उड़े। उसमें दोनो मारे गई। वेदा की आँखे दर्द से भरने लगी। तभी वेदा ने वह दुशमन के नकाब उतार। जो वेदा कि जुड़वा बहन था। तब माँ वहाँ पहुँची। वेदा माँ कि और देखा। एक अनकहा सच जो बाहर आ गया। वेदा धीरे-धीरे सब समझने लगे।

वेदा रोते हुए खुद से पूछा "वह दुशमन कौन था? तो मैं कौन हूँ?" सवाल के बाद सवाल वेदा के दिल में उचलने लगी। अब वेदा यकीन के मतलब भूल चुका थी। यकीन से नफ्रत करने लगा। अंधेरे में माँ की उम्मीद कि रोशनी भी उसे रास्ता नही दिखाया। वह अंधेरा वेदा की पूरे जिंदगी कब्सा कर लिया था।

तभी वेदा ने अपनी पिता कि आखरी लफस याद किया "राम होता : उम्मीद बडी। बनेगी हर मुश्किल का गाडी" उस समय वेदा ने समझ लिया कि मेरा जनम एक खास मकसद से हुआ है। "अपनी बदला पूरा करना" यह नई मकसद ने उसकी जिंदगी बदल दी। और वेदा एक नई मिशन शुरू कि।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).